

Sanskrita Se Hi Vanisanskara

——
संस्कृत से ही वाणीसंस्कार

——
Document Information



Text title : Sanskrita Se Hi Vanisanskara

File name : sanskRRitasehIvANIsanskAra.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.


Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org



——
संस्कृत से ही वाणीसंस्कार



संस्कृत-शिक्षा से ही होता वाणी का संस्कार
किया इसी ने शब्द-शास्त्र का अद्भुत आविष्कार
स्वर-व्यंजन-वर्णों का वैज्ञानिक यह ज्ञान कराती,
ध्वनियों का भी सूक्ष्म विवेचन यही हमें बतलाती,
यहीं हमें शब्दों के जीवन का इतिहास पढाती,
उनके जन्म-मरण-परिवर्तन का भी भेद बताती,
इसकी कुञ्जी से ही खुलता भाषाओं का द्वार
किया इसी ने शब्द-शास्त्र का अदभुत आविष्कार । १
लैटिन ग्रीक जर्मनी रूसी अंग्रेजी ईरानी,
भाषायें यूरोप-एशिया की जो नई-पुरानी,
इनके भी जीवन विकास में संस्कृत का अवदान,
इसके बिना न सम्भव होना इनका उत्तम ज्ञान,
भाषा-कुल के मूल-ज्ञान का संस्कृत ही आधार
किया इसी ने शब्द-शास्त्र का अद्भुत आविष्कार । २
- रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskrita Se Hi Vanisanskara

pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

